मैमोग्राफ़ी टेस्ट में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल से जुड़ी स्टडी (एआईएमएस)

स्टडी में हिस्सा लेने वालों को जानकारी देने के लिए लीफ़लेट

एनएचएस का यह स्क्रीनिंग सेंटर ऐसी रिसर्च स्टडी में हिस्सा ले रहा है जिसमें कैंसर विशेषज्ञों की मदद करने वाली एक नई टेक्नोलॉजी को टेस्ट किया जा रहा है. इससे स्तन कैंसर का पता लगाने के लिए, एनएचएस की स्क्रीनिंग प्रोसेस को बेहतर बनाया जा सकता है. हमारा लक्ष्य है कि आने वाले समय में हम आपके और अन्य महिलाओं के लिए, स्तन कैंसर की स्क्रीनिंग की बेहतर सेवा उपलब्ध करा सकें.

इस रिसर्च का मकसद एक नए कंप्यूटर सिस्टम को टेस्ट करना है, जो आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (एआई) टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करता है. इससे, स्क्रीनिंग के दौरान ली गई स्तन की इमेज (मैमोग्राम) से, कैंसर के लक्षणों का पता लगाने में मदद मिलती है. हमने इस बारे में पहले ही काफ़ी रिसर्च की है और साबित किया है कि यह टेक्नोलॉजी, इन स्कैन की जांच करके कैंसर का पता लगाने में उतनी ही कारगर है जितना कि कोई विशेषज्ञ रेडियोलॉजिस्ट होता है. हमारा मानना है कि इस टेक्नोलॉजी की मदद से, यूके में स्तन कैंसर की स्क्रीनिंग को ज़्यादा सटीक, सुरक्षित, और किफ़ायती बनाया जा सकता है. साथ ही, इससे मरीज़ों को स्क्रीनिंग का बेहतर अनुभव दिया जा सकता है. इससे एनएचएस की, स्क्रीनिंग से जुड़ी सेवाओं और स्वास्थ्यकर्मियों को सीधे तौर पर मदद भी मिल सकती है. अब हमें जानना है कि यह टेक्नोलॉजी, एनएचएस सेटिंग के साथ असल में कैसे काम करती है.

आपके लिए यह जानना ज़रूरी है कि इस स्टडी का, आपको मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं पर कोई असर नहीं पड़ेगा. साथ ही, आपकी स्क्रीनिंग सामान्य तरीके से होती रहेगी. हालांकि, अगर आपको अपने स्कैन इस स्टडी में शामिल नहीं करने हैं, तो आपके पास इस रिसर्च में शामिल होने से ऑप्ट आउट करने का विकल्प है. (अगले पेज पर पूरी जानकारी देखें).

स्क्रीनिंग सेंटर पर, कैंसर विशेषज्ञ आपके और अन्य महिलाओं के सभी स्कैन की जांच, पहले की तरह ही करते रहेंगे और इन्हीं के नतीजे आपको डाक से भेजे जाएंगे. साथ ही, बैकग्राउंड में, कंप्यूटर सिस्टम से भी इनकी जांच की जाएगी. हालांकि, इस जांच के नतीजे, स्क्रीनिंग सेंटर में आपको सेवा देने वाले स्वास्थ्यकर्मियों के साथ शेयर नहीं किए जाएंगे.

रिसर्च टीम को आपका नाम या कोई ऐसा डेटा नहीं दिखेगा जिससे आपकी पहचान की जा सके. साथ ही, स्टडी वाले सारे डेटा को गोपनीय रखा जाएगा और उसे सुरक्षित तरीके से सेव किया जाएगा.

एनएचएस ने इस स्टडी के दौरान, इस स्क्रीनिंग सेंटर पर आने वाली सभी महिलाओं की पहचान गोपनीय रखते हुए, उनके स्कैन को स्टडी में शामिल करने की अनुमति दी है. इसका मतलब है कि आपके स्कैन को इस स्टडी में शामिल किया जाएगा. साथ ही, ऊपर बताई गई टेक्नोलॉजी की मदद से उसकी जांच की जाएगी. इस स्टडी में हिस्सा लेने के लिए, हम आपके आभारी हैं. इसमें ज़्यादा से ज़्यादा महिलाओं के शामिल होने से, हम इस टेक्नोलॉजी को बेहतर तरीके से टेस्ट कर पाएंगे. हालांकि, अगर आपको अपने स्कैन को इस स्टडी में शामिल नहीं करना है, तो इस रिसर्च में शामिल होने से ऑप्ट आउट करना बहुत आसान है. ऐसा, स्क्रीनिंग से पहले या उसके तीन महीनों के अंदर किया जा सकता है. इससे आपको मिलने वाली सेवा पर किसी भी तरह का असर नहीं पड़ेगा. ऑप्ट-आउट करने के लिए, कृपया हमारी वेबसाइट **www.imperial.ac.uk/aiscreening** पर जाएं या हमें **0203 313 0147** पर कॉल करें. अगर आपने अपनी स्क्रीनिंग के बाद ऑप्ट-आउट किया, तो हो सकता है कि आपके डेटा को स्टडी के लिए पहले से ही प्रोसेस कर दिया गया हो. हम यह पक्का करेंगे कि आपका डेटा स्टडी से हटा दिया जाए और ऐसा हो जाने पर आपको इस बारे में बताएंगे.

इस रिसर्च पर इंपीरियल कॉलेज लंदन, सेंट जॉर्ज यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल्स एनएचएस फाउंडेशन ट्रस्ट, इंपीरियल कॉलेज हेल्थकेयर एनएचएस ट्रस्ट, और रॉयल सरी एनएचएस फ़ाउंडेशन ट्रस्ट, Google Health के साथ मिलकर काम कर रहे हैं. Google Health, इसमें टेक्नोलॉजी पार्टनर के तौर पर शामिल है. Google Health का रिसर्च ग्रुप इस पर काम कर रहा है कि स्तन कैंसर की स्क्रीनिंग और उसका पता लगाने में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है. यूके के नैशनल इंस्टिट्यूट फ़ॉर हेल्थ रिसर्च (एनआईएचआर) ने इस रिसर्च प्रोजेक्ट को फ़ंड दिया है, ताकि पता लगाया जा सके कि यह टेक्नोलॉजी, यूके में स्तन कैंसर की स्क्रीनिंग के प्रोग्राम के लिए कारगर साबित हो सकती है या नहीं.

इस स्टडी की समीक्षा, कॉन्फ़िडेंशिएलिटी ऐडवाइज़री ग्रुप (सीएजी) ने की है. सीएजी, आम लोगों और उन पेशेवरों का एक ग्रुप है जो मरीज़ की सहमति के बिना उसकी गोपनीय जानकारी के इस्तेमाल से जुड़े मामलों में विशेषज्ञ सलाह देते हैं. सीएजी ने इस स्टडी को मदद दिए जाने का सुझाव दिया है और हेल्थ रिसर्च अथॉरिटी ने इसे अनुमति दी है.

यहां एक छोटा वीडियो दिया गया है. इसमें बताया गया है कि इस स्टडी को कैसे किया जाएगा और आगे इस टेक्नोलॉजी की क्या भूमिका रहेगी. यह वीडियो हमारी वेबसाइट पर देखा जा सकता है.

इस स्टडी और आपके डेटा का इस्तेमाल कैसे किया जाएगा, इस बारे में ज़्यादा जानकारी के लिए, स्क्रीनिंग वाली जगह पर लीफ़लेट की कॉपी उपलब्ध है. इसमें पूरी जानकारी मौजूद है. इसके अलावा, कृपया क्यूआर कोड या इस लिंक का इस्तेमाल करके हमारी वेबसाइट पर जाएं: www.imperial.ac.uk/aiscreening

स्टडी के बारे में अहम जानकारी

स्टडी का स्पॉन्सर: इंपीरियल कॉलेज लंदन

स्टडी की फ़ंडिंग: नैशनल इंस्टिट्यूट फ़ॉर हेल्थ रिसर्च

मुख्य शोधकर्ता: Professor Ara Darzi, Institute of Global Health Innovation, Imperial College London, 10th Floor, Queen Elizabeth the Queen Mother Wing, St. Mary's, London, W2 1NY

ईमेल: aimstrial@imperial.ac.uk